National Journal of
Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2026; 1(64): 244-246
© 2026 NJHSR
www.sanskritarticle.com

महीपत श्रीवास
पी.एच.डी.शोधार्थी, हिंदी अध्ययन शाला एवंशोधकेंद्र, महाराजा छत्रसाल-बुंदेलखण्ड विश्विवद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

शोध निर्देशक
डॉ. रघुनाथ पाल,
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस शासकीय, बाबू डिग्री महाविद्यालय,
नौगाँव जिला छतरपुर (म.प्र.)

.

Correspondence:
महीपत श्रीवास
पी.एच.डी.शोधार्थी, हिंदी अध्ययन शाला एवंशोधकेंद्र, महाराजा छत्रसाल-बुंदेलखण्ड विश्विवद्यालय, छतरपुर (म.प्र.)

वाचिक परंपरा के संदर्भ में, पंडित गंगाधर व्यास की चौकड़ियों का अध्ययन

महीपत श्रीवास, डॉ. रघुनाथ पाल

शोध सार

पंडित गंगाधर व्यास जी ने अपने साहित्य में भावपक्षीय सरिता बहाई तो साथ ही कलापक्ष के सागर भी गोते लगाए।इनके द्वारा अत्यधिक मात्रा में साहित्य सृजन किया गया किन्तु वह समय की धारा के साथ लुप्तप्राय हो गया। जिसके पुनरुद्धार हेतु श्री कुं शिवभूषण सिंह गौतम 'भूषण' एवं डॉ. कुंजी लाल पटेल 'मनोहर' जी ने भगीरथ प्रयास किया।

डॉ. राधावल्लभ शर्मा ने अपने शोध प्रबंध ''कवि गंगाधर व्यास एवं उनका काव्य '' में उनकी एक दर्जन से अधिक रचनाओं् का उल्लेख किया है। (1)
इन रचनाओं में जामवती का विवाह प्रबंध काव्य नीति मंजरी एवं विश्वनाथ पताका मुक्तक काव्य सत्योपाख्यान अनुवाद खड़ी और चौकडि़या फागें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

इस शोध पत्र के में व्यास जी की फागों के माध्यम से बुंदेली भाषा एवं लोक संस्कृति को समझने का प्रयास किया गया है।

इन फागों के विषय ईश्वर वंदना्, बसंत और होली के त्यौहार, राधा-कृष्ण प्रेम लीला, राधा-गोपी संवाद एवं उनकी विरह वेदना, उद्धव संवाद, श्रंगार रस के दोनों पक्षों संयोग एवं वियोग, नायिका का नख-शिख वर्णन आदि हैं।जिसमें बुंदेली भाषा की रीतिकालीन साहित्य के अनुसार अभिव्यक्ति हुई है।इसके अतिरिक्त लोकसाहित्य एवं संस्कृति के विषय के रूप में सौतिया डाह, ननद-भौजाई, अटका या वुझौअल तथा आम जनों को दी गई सीख है।

बीज शब्द

फाग, लौकिक साहित्य , लोकसंस्कृति

प्रस्तावना

बुंदेली फाग साहित्य की बृहत्रयी के रूप में तीन फागकारों का स्थान उल्लेखनीय है। जिसके आधार स्तंभ लोककवि ईसुरी, पंडित गंगाधर व्यास और ख्यालीराम जी हैं।

रास्ता सुगम ईसुरी डारी अच्छी राय विचारी।
गंगाधर गट्टी पुरवा के पक्की सड़क निकारी।
जां जां झील रही वोधन ने, ख्याली ख्याल सुधारी।(2)

इन तीनों फाग साहित्यकारों ने लोक संस्कृति की विभिन्न रचनाधर्मिता को लोक साहित्य में रचा। जो आज लोकमानस के हृदय पटल पर मुरुष रूप से अंकित है।पंडित गंगाधर व्यास जी ने प्रचुर मात्रा में चौकडिया और खड़ी फागों की रचना की। किन्तु पिछले कुछ वर्षों तक उनका कोई अधिकृत एवं सम्पूर्ण

संकलन उपलब्ध नहीं हो सका। कुछ विद्वानों यथा पंडित श्रीनिवास शुक्ल ने उनकी प्रमुख रचनाओं का संकलन किया। इसके अतिरिक्त कुछ शोध प्रबंधों जैसे बुंदेली का फाग साहित्य में भी उनके साहित्य को स्थान दिया गया।

इन संकलनों एवं लधु शोध प्रबंधों के होते हुए भी व्यास जी के साहित्य को और अधिक विस्तृत रूप से संकलित करने की आवश्यकता समझी जा रही थी। जिससे उन पर और अधिक शोध कार्य किया जा सके।

इसी कार्य में अपने तन-मन-धन से जुटकर श्री डॉ कुंजी लाल पटेल मनोहर एवं श्री शिवभूषण सिंह गौतम जी ने उनकी दो सौ से अधिक फागो का संकलन एवं संपादन किया। जो इस क्षेत्र में मील का पत्थर साबित हुआ।

इस संकलन की विशेषता यह है कि ऐसी फागे जो मात्र एक-दो चरणो के अंतर से गाई जाती हैं उनमें समानता लाकर एकंरूपता प्रदान की गई।

इस संकलन की दूसरी विशेषता यह है कि श्री शिवभूषण सिंह गौतम जी ने व्यास जी की फागों का खड़ी बोली हिन्दी में अनुवाद भी कर दिया है। जिससे पाठकों को अर्थ समझने में सरलता हो।

प्रस्तुत संग्रह में संकलक ने बुंदेली लोक साहित्य के फागों रूपी फूलों को जो यत्र-तत्र बिखरे हुए थे एक गुलदस्ता के रूप में पाठकों के समक्ष प्रस्तुत किया है। इसी बात को आचार्य रामचंद्रशुक्ल का निम्न कथन इंगित करता है- 'यदि प्रबंधकाव्य एक विस्तृत वन स्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है ।(3)

इस संग्रह की फागों की विलक्षणता की तुलना यदि लोक कवि ईसुरी की फागों से की जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

मैंने इस संकलन का अध्यायवार अध्ययन किया। जिसमें पढ़ते समय पाठक का हृदय रम जाता है और इसे बारंबार पढ़ने की इच्छा मन में जाग्रत होती है।

भक्ति संबंधी फागों में भगवान शिव की भक्ति का अनूठा वर्णन देखें।

दूजौ को ऐसौ हितकारी, जैसौ शिव त्रिपुरारी ।।
भस्मासुरै अटल वर दीन्हों, जानत सब संसारी।
निरख निहार करी इक छिन में, कामदेव की छारी।।
जो जन सरन दुखित गये शिव के, पल में भये सुखारी।
दोऊ कर जोर कहत 'गंगाधर', काहे सुरत बिसारी ।।(4)

भगवान श्री कृष्ण की लीला संबंधी फाग दृष्टव्य है।

हरि ने अरजुन के रथ हांके, बने सारथी बांके ।।
दहिनी चौकी हनूमान की, ध्यान सारदा मां के।
छकछकात रथ जात गगन में, धरनि लगै ना चाके।
'गंगाधर' बाजू के ऊपर, महाभारत रंग भांके।(5)

राधा और गोपियों के सौंदर्य वर्णन में अरबी-फारसी के शब्द यथा महताब, रब आदि का प्रयोग हुआ है।

इन खाँ दई रोशनी फबकी, मुख महताब अजबकी।।
सुन्दर चाल चलत गज कैसी, छकी फिरत आसवकी।
ऐसी नहीं नरी न किन्नरी, सरग तरइयां रबकी ।।
तैसी बनी अनूपम सोभा, कोटन तो संभवकी।
'गंगाधर' राधे की छवि लख, भ्रमत रही मत कबकी ।।(6)

उद्धव संवाद संबंधी फागों में महाकवि सूरदास के पदों की छटा विद्यमान है।

हम खाँदै गये जोग निसानी. सपनें की दिल जानी।।
करबौ हाय सोच रै जैबो, जा उनकी मिजमानी।
करने ती जा दशा हमारी, बरजी एक ना मानी।।
अपुन भये मथुरा के राजा, करी कुबरी रानी।
गंगाधर नित रटत सांवरौ, राधा-राधा-बानी ।।(7)

आज के समय में नव युगल अपने गाल पर गुदना गुदवाते हैं। इसकी परंपरा पुराने समय से ही है। नायिका के गाल पर गुदना बड़ा प्यार लग रहा है।

गुदना लगत गाल पै प्यारौ, हमखां रजऊ तुमारौ ।।
गोरे वदन गाल के ऊपर, बन बैठो रखवारी।
देखन देव नजर भर हमखों, घूंघट पट ना डारौ।
ठांड़ी होव देख लें चित सों, जी ललचात हमारौ।
'गंगाधर' की तरफ देख के, दै देव तनक इसारौ।(8)

सौतिया डाह संबंधी फाग देखें।

तुम खाँ लगत सौतिया प्यारी, सुध बिसराई हमारी ।।
इतै ना आव उतई जा बालम, जाँ सब रैन गुजारी।
अब का होत हमारौ साजन, मरियत मार कटारी ।।
समझाओ है कोट जतन कर, हमने मानी हारी।
'गंगाधर' राधे की बातै, सुन-सुन हँसत बिहारी।।(9)

छोटी ननद के व्यवहार में परिवर्तन देखकर भौजाई अपने पति से शिकायत करती है।

भौतऊ लागी दैन बिंदुलिया, बारे में ननदुलिया।
उखरे नहीं दूध के दूँता, धोउन लागी चुलिया।
खेलत रहत बालकन संगै, डारें गरें हथुलिया।
'गंगाघर' इनके गौने की, वेग सजा देव डुलिया।(10)

बुंदेली लोक अंचल में पहेली को अटका कहा जाता है। व्यास जी का बहुप्रचलित अटका देखें।

मोरो जौ अटका पहचानों, होय तुमारौ जानों ।।
देव की चुल में नाहर घुस गओ, रोबै ठाँड़ो दानौं।
बँदरा रओ पकर पटवारी, नौरा रोपें थानों।
हिरना तौ पेड़े पै चढ़ गओ, बिगना पैरें गानों।
'गंगाधर' मोहलत दई तुमखां, बरसरोज लौ छानों ।।(11)

अंत में नीति संबंधी फागों के माध्यम से सीख दी गई है।
जिन खां खाने और कमानें, कैसें जुरत खजानें ।।
माया जोर धरें घर भीतर, कहौ काय के लानें।
चलती बेरा संग ना जाबै, देख-देख पछतानें।
जीने देह दई मानुष की, तियै फिकर में रानें।
'गंगाधर' ईसुर लयें ठाँड़े, जीखाँ जितनों चानें ।।(12)

निष्कर्ष

'गंगाधर व्यास की चौकडियाँ ' की भाँति वाचिक परंपरा में प्रचलित और भी लोक साहित्य की विधाओं का संकलन, संरक्षण, संवर्धन और शिक्षण होना चाहिए । साथ ही नई शिक्षा नीति के तहत विलुप्त हो रही लोक साहित्य की विरासत को स्नातक और स्नातकोत्तर के पाठ्यक्रम में अध्ययन और अध्यापन के लिए एक वैकल्पिक क्षेत्रीय विषय के रूप में लागू किया जाना चाहिए। इसे पाठ्यक्रम में समाहित करने से यह हमारी पारिवारिक एवं ग्रामीण लोक संस्कृतियों की अवधारणा के महत्व और उसमें समाहित भावी संभावनाओं को जानने में सहायक होगा।और इससे क्षेत्रीय विधाओं में शोधकार्य हेतु भी सहायता मिलेगी।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पंडित गंगाधर व्यास की चौक्डियाँ, एन्सवे ईकोराईटर्स 204, वाश्ले मेनर, रुस्तम बाग,बंगलुरु,कर्नाटक प्रथम संस्करण सन 2017 ई.
2. . पंडित गंगाधर व्यास की चौक्डियाँ, एन्सवे ईकोराईटर्स 204, वाश्ले मेनर, रुस्तम बाग,बंगलुरु,कर्नाटक प्रथम संस्करण सन 2017 ई.
3. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, कमल प्रकाशन नई दिल्ली, नवीन संस्करण, पृ. क्रं. 175

4-12 . पंडित गंगाधर व्यास की चौक्डियाँ, एन्सवे ईकोराईटर्स 204, वाश्ले मेनर, रुस्तम बाग,बंगलुरु,कर्नाटक प्रथम संस्करण सन 2017 ई.